

मरीजों की सेवा किसी साधना से कम नहीं

ईर्ष्या का कारण है तुलना

प्रश्न:- ईर्ष्या की फीलिंग क्यों क्रियेट होती है ?

उत्तर:- ईर्ष्या की भावना पैदा होने के कारण को जानने के लिए हमें चेक करना होगा कि इसमें हमारा कौन-सा बिलीफ सिस्टम काम कर रहा है। यहां पर इस भाव ने काम किया कि जिसका जितना लोग सम्मान करते हैं वो उतना ज्यादा अच्छे हैं। इस बिलीफ सिस्टम के कारण मैं जीवन में बहुत ज्यादा डिस्टर्ब महसूस करूंगी और इस डिस्टर्ब के कारण ईर्ष्या फील करूंगी। फिर मैं अपने आपको अच्छा साबित करने के लिए लोगों के सामने आपकी आलोचना करूंगी क्योंकि मुझे अपने आपको अच्छा फील करवाना है। अब इससे रिस्क ये होगा कि मैं अपने आपको अच्छा फील करवाने के लिए आपकी बुराईयों को देखना शुरू कर दूंगी। क्या है इनमें ? क्या अच्छा लगता है ? इनको क्या पता कि वास्तव में ये कैसे हैं ? इनको कुछ मालूम ही नहीं है। अब जैसे ही मैं इस तरह की नेगेटिव एनर्जी क्रियेट करूंगी तो लोग मुझसे दूर होना शुरू कर देंगे। क्योंकि मैंने कौन-सी एनर्जी क्रियेट करनी शुरू कर दी ? निगेटिविटी की, जैलेसी की, फिर हो सकता है कि जब भी मुझे चांस मिले तो मैं आपकी बुराई करना शुरू कर दूँ। अब अगर उसी दृश्य में मैं अपना बिलीफ सिस्टम चेंज कर दूँ कि मैं जानती हूँ कि मैं कौन हूँ, मैं सम्पूर्ण नहीं हूँ, मैं जानती हूँ हमें बहुत सारे काम करने हैं। मेरे अंदर अपनी कमजोरियां हैं, अपनी शक्तियां हैं -ब.कु.शिवानी

जिस पर मुझे काम करना है लेकिन मैं क्या करती हूँ कि दूसरों के ऊपर ही काम करना शुरू कर देती हूँ। यह बात ही नहीं है कि लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं या किस आधार पर लोग मेरे पास आते हैं। ये जीवन की यात्रा मेरी अपनी है। हमें किसी के भी साथ स्वयं की तुलना करने की जो आदत है वो छोड़नी होगी क्योंकि मैं जो हूँ, जैसी हूँ, मुझसे अच्छा कोई नहीं जानता है।



-ब.कु.शिवानी

ये तो नेचुरल है कि यदि आप अच्छी एनर्जी क्रियेट करते हैं तो लोग आपके पास आते हैं। लेकिन ये कोई पैमाना नहीं है कि लोगों को आपके पास आना होगा, अच्छी तरह से बात करना होगा, इसके पीछे बहुत सारे फैक्टर काम करते हैं। आज के समय में मैं इसे देख सकती हूँ। यह भी संभव है कि मैं आपको पसंद नहीं करूँ, फिर भी मैं आपके पास आऊँ और आपसे अच्छे से बात करूँ। यदि आप उस आधार पर स्वयं का मूल्यांकन करेंगे तो वो तो बहुत रिस्की होगा। मुझे अपने आपको खुद मूल्यांकन करना चाहिए। इसके लिए हमें अपने बिलीफ सिस्टम को बदलना होगा कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ, ये सिर्फ मुझे पता है। मुझे अपनी कमजोरियों के ऊपर काम करना है। लोग क्या कह रहे हैं, ये महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि लोग अपने-अपने दृष्टिकोण से बोल रहे हैं। हाँ, लोग जो कहते हैं, आई कैन टेक फीड बैक, लेकिन मैं इसे फीडबैक की तरह ही लूंगा और स्वयं के साथ काम करूंगा। एक-एक बिलीफ सिस्टम मेरे थॉट पर और फिर मेरे भाग्य पर काम करता है। और फिर हम कहते हैं नहीं-नहीं इसमें मेरा क्या दोष है ? ये तो सब इनकी वजह से हुआ।

मेरे अंदर हीनता की मिश्रित भावनायें इसलिए आ जाती हैं क्योंकि मैं अपनी तुलना दूसरों के साथ करती हूँ। यह भी एक बिलीफ सिस्टम है। मुझे अच्छा होने के लिए या मुझे जीतने के लिए किसी को तो हारना ही है क्योंकि जिंदगी तो हार-जीत का खेल है। जिंदगी हार-जीत का खेल है यह हमारा बनाया हुआ बिलीफ सिस्टम है।



शान्तिवन। दादी जानकी, दादी हृदयमोहिनी, डॉ.अशोक मेहता, डॉ.प्रताप मिश्रा, डॉ.बनारसी तथा अन्य नर्सों के लिए आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए।

शान्तिवन। ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि मरीजों के स्वास्थ्य की सच्चे दिल से सम्भाल करने की सेवा किसी साधना से कम नहीं है। अपने सुखों को त्यागने की वृत्ति रखने वाले ही इस सेवा में सफल होते हैं। वे ब्रह्माकुमारी मेडिकल विंग द्वारा नर्सों के लिए आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित कर रही थी।

उन्होंने कहा कि अस्पताल में सेवा करने वालों का जीवन त्यागमय होता है जो बिना देरी किए गम्भीरतापूर्वक मरीजों के स्वास्थ्य को लाभ पहुंचाने के लिए तत्पर रहते हैं। नर्सों के सौम्य व्यवहार से मरीजों की आधी बीमारी दूर हो जाती है। अस्पताल में घर जैसा माहौल मिलने से मरीजों के स्वास्थ्य में तीव्र गति से सुधार होता है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि मरीज को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाने के लिए नर्सों को कई बार स्वयं की सुविधाओं का भी त्याग करना पड़ता है। दवाई के साथ नर्सों की शुभभावनाओं के वायब्रेशन्स भी मरीज को जल्दी स्वास्थ्य लाभ लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमें इस बात का ख्याल रखना होगा कि मन की खुशी व विश्वास भी दवाई का काम करती है। बीमारी भले बड़ी भी हो लेकिन मन की श्रेष्ठ स्थिति हमारे लिए हीलिंग का काम करती है।

मेडिकल विंग के अध्यक्ष डॉ.अशोक मेहता ने कहा कि राजयोग के अभ्यास से मन में अलौकिक ऊर्जा पैदा होती है जो शरीर को सकारात्मक लाभ पहुंचाती है। मेडीटेशन पूरी तरह से मेडीसिन का काम करता है।

दिलों को प्रकाशित ..

-पेज 5 का शेष

अनासक्त बन कमलासीन श्री लक्ष्मी को याद करने की जगह हम मिट्टी के दीप जला कर बच्चों का खेल खेलते रहे हैं। मन मंदिर की सफाई करने की जगह बाह्य (स्थूल) सफाई से ही खुश हो जाते हैं। तभी तो लक्ष्मी हमसे रूठ गयी है। कमल फूल समान बन कर हम 'कमला', लक्ष्मी को प्राप्त कर सकते हैं। ज्यादातर लोग अत्यधिक भ्रष्ट तथा संस्कार विहीन हो गए हैं। अपनी कड़ी मेहनत की पूंजी को अय्याशी तथा ऐश युक्त साधन जुटाने में बरबाद कर रहे हैं। ऐसे भोगी, कामी, स्वार्थी, ऐश-परस्त, कर्म-भ्रष्ट और कर्तव्य-विहीन लोग क्या कभी दूसरों के हित की बातें सोच भी सकते हैं। आज रक्षक ही भक्षक बन गए हैं। समाज में विभिन्न प्रकार के व्यसन : शराब, सिगरेट, अफीम, जुआ, चोरी आदि फैल गए हैं। जिनका गहरा असर दिवाली, दशहरा, होली इत्यादि त्योहारों पर भी पड़ रहा है। अक्सर लोग विजय दशमी, दीपावली, नवरात्रि जैसे पर्वों पर शराब, अफीम, भांग, गांजा, जुआ आदि व्यसनों में लिप्त होकर आत्म-संयम खो अशोभनीय व अनुचित हरकतें करते हैं

जिससे त्योहार का मज़ा खराब हो जाता है। दिवाली पर हर साल लाखों-करोड़ों रूपए



चेन्नई। तमिलनाडु के राज्यपाल महामहिम रोसैया जी सायकिल यात्रा को रवाना करते हुए। साथ हैं ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।



दीव। एस.पी. रजनीश गुप्ता, कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष विशाल भाई, मेडिकल आफिसर महेश भाई वैश्य, ब्र.कु.दमयंती, ब्र.कु.कृति।



अरारिया। सीमा सुरक्षा बल बटालियन के कमाण्डेंट के.रंजीत तथा अन्य जवानों को रक्षासूत्र बांधने के बाद ब्र.कु.उर्मिला समूह चित्र में।



पानजी। गोवा के मुख्यमंत्री मनोहर पर्रिकर से शाश्वत यौगिक कृषि परियोजना के बारे में चर्चा करते हुए ब्र.कु.टैमिसिन रामसे, ब्र.कु.शोभा, ब्र.कु.सुमंत, ब्र.कु.सुनीता तथा ब्र.कु.सुरेखा।



गुयाना। गुयाना के प्रधानमंत्री को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात डॉ. सविता, ब्र.कु.जीन, ब्र.कु.मार्क एवं ब्र.कु.श्याम।



हाथरस। मेरा भारत-व्यसनमुक्त भारत कार्यक्रम की सफलता के पश्चात ब्र.कु.शांता, श्रीमती कमल बंसल, ब्रज कला अकादमी की अध्यक्ष श्रीमती उषा गुप्ता को सम्मानित किया गया।